1. मानव भूगोल—अर्थ, प्रकृति एवं विषय-क्षेत्र

(Human Geography: Meaning, Nature and Scope)

मानव भूगोल का अर्थ और प्रकृति

भूगोल का शाब्दिक अर्थ है—पृथ्वी का अध्ययन, परंतु विषय जितना सरल दिखता है उसका अध्ययन उतना ही क्लिष्ट और जटिल है, क्योंकि अध्ययन की वस्तु शाश्वत न होकर निरंतर परिवर्तनशील है। पृथ्वी का अर्थ केवल पृथ्वी ही नहीं उसके चारों ओर का विस्तृत वायुमंडल भी है जिसे अलग करके नहीं देखा जा सकता है। पृथ्वी की संरचना कुछ प्राकृतिक है तो कुछ मानव निर्मित भी है। दोनों का सम्यक रूप से अध्ययन करना आवश्यक है। तार्किक रूप से भूगोल एक अविभाज्य एवं समेकित विषय है, परंतु इसका अध्ययन दो शाखाओं के रूप में किया जाता है। या तो पृथ्वीतल के विभिन्न भागों को एक-एक कर क्षेत्रीय रूप से उसका अध्ययन किया जाए या इसके विभिन्न तत्त्वों या अवयवों के आधार पर इसका अध्ययन किया जाए। अवयवों के आधार पर भी अध्ययन करने के दो दृष्टिकोण हैं, भौतिक भूगोल जिसके अंतर्गत जलवायु, भूसंरचना, भूआकृतियाँ, मृदा, जीव इत्यादि हैं अथवा मानव भूगोल जिसके अंतर्गत आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक क्रियाकलाप आते हैं। भूगोल का ऐतिहासिक अध्ययन भी मानव भूगोल का विषय है, क्योंकि इसका बहुत बड़ा अंश मानव की पूर्वकालिक क्रियाओं का प्रतिफल है, अर्थात मानव भूगोल का विषय मानव और प्रकृति के बीच की पारस्परिक क्रिया-प्रतिक्रिया है।

मनुष्य भी जीव-जंतुओं, वनस्पतियों तथा निर्जीव पदार्थों के समान ही प्रकृति का एक अंग है। इन सभी का पोषण प्रकृति द्वारा ही होता है। इसीलिए, पृथ्वी को माता की संज्ञा दी गई है— **"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथव्याः।"** परंतु, अपनी विलक्षण बुद्धि के वशीभूत मानव ने कभी प्रकृति के साथ समन्वय स्थापित किया तो कभी संघर्ष भी किया। जहाँ प्रकृति के साथ मानव के समन्वय से उसकी संस्कृति का विकास हुआ वहीं प्रकृति के विरुद्ध संघर्ष से मानव की सभ्यता का विकास हुआ। इस प्रकार, मानव संस्कृति और मानव सभ्यता प्रकृति के साथ मानव के समन्वय और संघर्ष का इतिहास है।

प्राचीनकाल से विश्व की सभी सभ्यताओं ने विभिन्न क्षेत्रों में विकास किया, परंतु यह विकास बहुत धीरे-धीरे हुआ। अतः, पर्यावरण पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा। भूगोल का अध्ययन मूलतः ज्ञानार्जन और प्रकृति के रहस्यों की खोज पर ही केंद्रित था। परंतु, पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पुर्तगाली और स्पेनी साहसिक समुद्री अभियान के फलस्वरूप नई दुनिया (अमेरिका) की खोज और पुरानी दुनिया के लिए दक्षिण अफ्रीका की ओर से नए समुद्री मार्ग की खोज के बाद भूगोल का अध्ययन क्षेत्र बदलने लगा। कुछ ऐतिहासिक घटनाओं ने इसको आंदोलन का स्वरूप दे

अवनि और अंबर—धरती और आकाश

समय की पुकार है कि हमारा मंत्र हो—पृथ्वी हमारी माता है और अंतरिक्ष पिता। मानवजीवन सिर्फ पृथ्वी से प्राप्त संसाधनों पर ही निर्भर नहीं करता, वरन उसके ऊपर का वायुमंडल और उसके बाहर भी अंतरिक्ष मानवजीवन को प्रभावित करते हैं। हमारे हजारों उपग्रह इसी अंतरिक्ष में रहकर हमारे लिए संचार के माध्यम बने हुए हैं। रेडियो तरंगों को भी आयनमंडल परावर्तित कर दूर-दूर तक सूचना देने में सहायक बनता है। हवाई जहाज या हेलिकॉप्टर इसी अंतरिक्ष में उड़ते रहते हैं। कभी इसकी ओजोन परत सूर्य की घातक किरणों से समस्त जीवजगत की रक्षा करती है तो इसका तापमान हमारे जीवित रहने के लिए उपयुक्त जलवायु और परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है। इसी वायुमंडल में पवन धाराएँ बहकर कभी वर्षा के बादलों को लाती है तो कभी तूफान भी। अनंतकाल से तारों एवं ग्रहों को देवी-देवता मानकर पूजा जाता रहा है। इस प्रकार, यह कथन सर्वथा उचित है कि पृथ्वी हमारी माता और अंतरिक्ष पिता है। एक अच्छी संतान के रूप में हमारा कर्तव्य है कि हम इन दोनों की रक्षा का ध्यान रखें। इनकी प्रकृति और पवित्रता की रक्षा करते रहें।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि मानव समाज और पर्यावरण के बीच के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन मानव ोल का केंद्रबिंदु होना चाहिए।

विद्वानों द्वारा मानव भूगोल को विभिन्न दृष्टिकोणों से परिभाषित किया गया है। कुछ प्रमुख विद्वानों के द्वारा प्रस्तुत की परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं—

) **समन्वय की दृष्टि से**—"मानव भूगोल मानव समाजों और धरातल के बीच संबंधों का संश्लेषित अध्ययन है।"—ज़ेल (Ratzel)।

) **संघर्ष की दृष्टि से**—"मानव भूगोल अस्थिर पृथ्वी और क्रियाशील मानव के बीच परिवर्तनशील संबंधों का अध्ययन।"—एलेन सी॰ सेंपल (Ellen C Semple)।

3) **समन्वय और संघर्ष की सम्यक दृष्टि से आधुनिक परिभाषा**—"हमारी पृथ्वी को नियंत्रित करनेवाले भौतिक नियमों तथा सपर रहनेवाले जीवों के मध्य संबंधों के अधिक संश्लेषित ज्ञान से उत्पन्न संकल्पना" ही मानव भूगोल है—पॉल विडाल डी ला ब्लाश (Paul Vidal de La Blache)।

प्रकृति का मानवीकरण और मानव का प्राकृतीकरण

मानव स्वभावतः जिज्ञासु प्रकृति का जीव है, पृथ्वी पर होश सँभालते ही उसकी जिज्ञासा जागृत हुई कि वह कहाँ है? उसने पाया कि स्थल भाग चारों तरफ समुद्र से घिरा है—

'सिंधु-सेज पर धरा वधू सी, तनिक संकुचित बैठी सी'

3 / 8

ज्ञान में कुछ अधिक वृद्धि होने पर वह सोचने लगा—

'गगन के इस पार क्या है? गगन के उस पार क्या है?
क्या क्षितिज के पार जग, जिसपर टिका आधार क्या है?'

दो पदार्थों के पारस्परिक घर्षण से 'अग्नि' की उत्पत्ति और बाद में पहिए के आविष्कार के बाद मानव ने प्रकृति के साथ छेड़छाड़ प्रारंभ कर दिया। सीमित वैज्ञानिक या तकनीकी ज्ञान से अपने लिए कुछ हथियार बनाने, घर बनाने, कृषि उत्पादन इत्यादि के कारण प्रकृति के स्वरूप में विशेष परिवर्तन नहीं हो पाया, क्योंकि सभी क्रियाकलापों के निर्धारण में प्रकृति का वर्चस्व बना रहा। प्रकृति ही पर्यावरण का निर्धारक थी। प्रकृति के विभिन्न रूपों को मानव देवी-देवता के रूप में पूजता था। विश्व की सभी संस्कृतियों में सूर्य, अग्नि, वायु, मेघ इत्यादि ही पूज्य माने जाते रहे हैं।

समय के साथ मानव ने प्रकृति के रहस्यों की व्यापक खोज की। सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के साथ उसके वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान का भी विकास हुआ। प्रभावशाली तकनीकी के माध्यम से उसने प्रकृति पर आश्रित रहने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से अपनी इच्छानुकूल वातावरण के निर्माण का निश्चय किया। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों के मनमाने दोहन द्वारा उसने एक नया संसार बनाया। मानों उसने नई सृष्टि की रचना की। वह स्वयं ही विश्व का नियामक और नियंता बनने लगा। परंतु, शीघ्र ही इसके कुछ कुपरिणाम भी परिलक्षित होने लगे।

मानव के इस आत्मघाती विकास के भयानक परिणामों का पूर्वानुमान कर प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता ग्रिफिथ टेलर ने एक नए मार्ग का सुझाव दिया जिसे 'मध्यम मार्ग' कहा जाता है।

इनके अनुसार उपर्युक्त दो मार्ग, जिनमें प्रथम मार्ग का निर्धारक तत्त्व प्रकृति है और दूसरे का निर्धारक तत्त्व—सभी संसाधनों का यथासंभव अधिकतम उपयोग करना है, व्यावहारिक नहीं हैं। मानव आज इतनी ऊँचाई पर पहुँच गया है कि मा भाग्य भरोसे वह अपना जीवननिर्वाह नहीं कर सकता। परंतु, विकास की गाड़ी की गति इतनी भी नहीं रहनी चाहिए कि वा नियंत्रण के बाहर चली जाए। कहा गया है अति सर्वत्र वर्जित है। टेलर के प्रस्तावित मध्यम मार्ग को, जिसे 'नव निर्धारण की नीति' (neodeterminism) कहा जाता है, एक उदाहरण से स्पष्ट समझी जा सकती है। महानगरों में चौराहों पर गति नियंत्र बत्तियाँ लगी होती हैं। लाल बत्ती का संकेत है रुक जाना, पीली बत्ती का संकेतार्थ है आगे बढ़ने के लिए तैयार होना तथा ह बत्ती का अर्थ है आगे बढ़ना निरापद है, बढ़ जाना चाहिए। इसी प्रकार प्रकृति और प्राकृतिक संकेतों को दृष्टि में रखक विकास की गाड़ी को आगे बढ़ाना श्रेयस्कर है। प्रकृति में संसाधनों का अभाव नहीं है, परंतु उनके उपयोग के पूर्व समुचि सोच-विचारकर विकास का ऐसा मार्ग चुनना उचित है जिससे पर्यावरण को कोई हानि न पहुँचे। पिछले कुछ दशकों की अं

दौड़ ने ओजोन परत के क्षरण, भूमंडलीय तापमान में क्रमिक वृद्धि, जलभंडार के स्रोत—हिमनदों का गलना और मिट्टी की उर्वरता में कमी जैसी कई विनाशक घटनाओं को जन्म दिया है, जो महाविनाश को आमंत्रित करती है। विकास का नव मध्यम मार्ग पर्यावरण को संतुलित रखते हुए सतत पोषणीय विकास पर बल देता है। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में विकसित यह विचारधारा मानव समाज की समकालीन चुनौतियों और समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है।

उदाहरण

1. प्रकृति का मानवीकरण—आर्कटिक वृत्त के समीप के अधिकांश क्षेत्रों में जहाँ तापक्रम शून्य से भी नीचे रहता है, तीव्र पछुवा हवा बहती रहती है और हिमपात प्रायः निरंतर होता रहता है, वहाँ के जनजीवन की कल्पना करें। हिमाच्छादित सड़कों पर गाड़ियों के फिसलने का डर रहता है। अतः, उनमें विशेष प्रकार के टायर लगाने पड़ते हैं, दिन में भी गाड़ियों की बत्तियाँ जलती रहती हैं। घरों और कार्यालयों को विद्युत द्वारा कृत्रिम रूप से गर्म रखा जाता है। भले ही वहाँ के जलवायु में वनस्पतियाँ न उग पाती हों, दूसरे देशों से ताजे फलों-सब्जियों इत्यादि को हवाई जहाज से मँगा लिया जाता है। मोबाइल फोन और इंटरनेट के द्वारा वहाँ के लोगों का संपर्क विश्व के किसी कोने से बना रहता है। टेलीविजन से विश्व के किसी कोने में होनेवाली गतिविधि उनकी आँखों के सम्मुख रहती है। इस प्रकार, प्रकृति से मानव गतिविधि बाधित नहीं होती है। इसे प्रकृति का मानवीकरण कहते हैं।

2. मानव का प्राकृतीकरण—इसी प्रकार, अफ्रीका के जंगलों अथवा भारत में छोटानागपुर और छत्तीसगढ़ के जंगलों में रहनेवाली कुछ जनजातियाँ प्रकृति का अंग बन गई हैं। प्रकृति के साथ बिना छेड़छाड़ के उनका जीवनयापन होता है, जो प्रायः पूर्णतः प्रकृति पर ही निर्भर रहता है। वर्षा के समय जब नदी, नालों में पानी तेजी से बहने लगता है, वे कुछ दूर ऊँचे स्थान पर झोपड़ी बना लेते हैं या तंबू डाल देते हैं और गर्मी के समय नालों के किनारे ही अपनी झोपड़ी रखते हैं। प्रायः, जंगल के फल ही उनकी भूख मिटाते हैं। कभी-कभी जंगल में ही नाले के समीप जमीन के किसी टुकड़े की झाड़ियाँ काटकर खेत बना देते हैं। इसमें खेती भी करते हैं, परंतु ये खेत प्रायः स्थायी नहीं होते। बाहरी दुनिया के लोगों की भाँति वे भी उत्सव मनाते रहते हैं। महुआ की शराब उनकी मस्ती बढ़ाती है और जंगल के फूल उनका सौंदर्य। [illegible] की बी[illegible] का उपचार करती हैं। आकस्मिक विपत्ति में घनी झाड़ियों, घने पेड़ों की डालियों के बीच छिपकर वे [illegible] कर हैं। वनदेवता और वनदेवी उनकी आस्था के केंद्र हैं। तकनीकी के उपयोग के बिना भी उनका [illegible] रहता आमोद-प्रमोद से भरा होता है। मानव प्रकृति का अंग बन जाता है, इसे मानव का प्राकृतीकरण कहते हैं।

मानव भूगोल का विषय—क्षेत्र और उपक्षेत्र

समाजशास्त्रियों, वैज्ञानिकों और अन्य विद्वानों ने भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से मानव और प्रकृति के संबंधों का अध्ययन किया है। जहाँ समाजशास्त्रियों का अध्ययन जनसंख्या, भोजन, वस्त्र, आवास, समाज और संस्कृति इत्यादि क्षेत्रों में केंद्रित रहा, वहीं वैज्ञानिकों के अध्ययन का केंद्र 'मानव क्रियाओं का पर्यावरण पर प्रभाव' रहा। फिंच और ट्रेवार्था ने मानव भूगोल की विषयवस्तु को दो भागों में बाँटा है।

(i) भौतिक या प्राकृतिक पर्यावरण—इसके अंतर्गत जलवायु, धरातल का स्वरूप, पहाड़, नदी, मिट्टी, खनिज, वन-संपदा एवं जल संसाधन इत्यादि का अध्ययन किया जाता है।

(ii) सांस्कृतिक पर्यावरण—इसके अंतर्गत जनसंख्या, कृषि, उद्योग, परिवहन या विकास के स्तर इत्यादि का अध्ययन किया जाता है।

'जींस ब्रूंस' के अनुसार, विषय-क्षेत्र का विभाजन निम्नलिखित रूप से किया जा सकता है।

(i) **मृदा संबंधित तथ्य**—(क) मकान (ख) परिवहन

(ii) **जीव और वनस्पति संबंधित तथ्य**—(क) कृषि (ख) पशुपालन

(iii) **मृदा प्रदूषण से संबंधित तथ्य**—(क) जीव और वनस्पतियों का विनाश (ख) खनिज उपयोग

हंटिंग्टन के अनुसार, मानव भूगोल के तथ्य—हंटिंग्टन के अनुसार, पौधे और जीव पृथ्वी की भौतिक दशाओं पर निर्भर हैं। ये दशाएँ एक-दूसरे को प्रभावित करती है जबकि मानव के क्रियाकलाप मुख्य रूप से उसे प्रभावित करते हैं। सभ्यता और विकास की अनुक्रियाएँ चित्र 1.1 में प्रदर्शित हैं। तीरों द्वारा प्रभाव की दिशाओं का प्रदर्शन किया गया है।

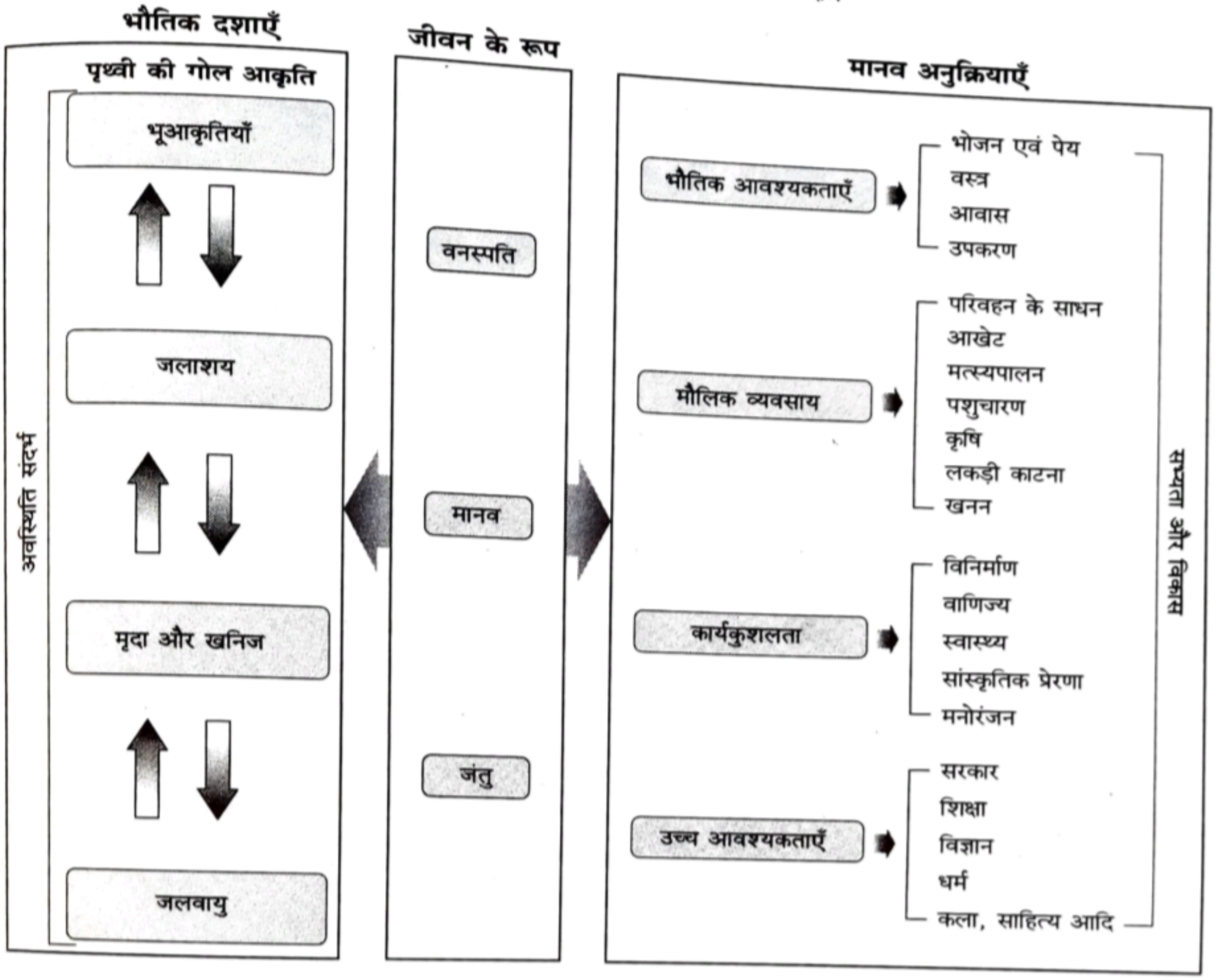

चित्र 1.1

उपर्युक्त चित्र 1.1 के अनुसार, मानव भूगोल के अध्ययन के क्षेत्र निम्नलिखित हैं—

(क) **आवश्यकताओं का भूगोल**—भौतिक आवश्यकताएँ—भोजन, वस्त्र, आवास, औजार इत्यादि

(ख) **प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग का भूगोल**—मानव की आवश्यकताओं को पूरा करनेवाले प्राकृतिक संसाधन, जैसे—कृषि और उद्योग

(ग) **आर्थिक एवं सामाजिक भूगोल**—परिवहन, उत्पादन, विनिमय और सांस्कृतिक गतिविधियाँ

(घ) **राजनीतिक एवं ऐतिहासिक भूगोल**—देश, उसके राज्यों की सीमाएँ, उनके बीच के मार्ग इत्यादि

सामाजिक विज्ञान के अनुसार, मानव भूगोल के उपक्षेत्र निम्नलिखित हैं—

(क) व्यावहारिक भूगोल

(ख) राजनीतिक भूगोल

(ग) आर्थिक भूगोल

(घ) सामाजिक भूगोल

सामान्य भूगोल की भाँति मानव भूगोल में परस्पर संबंध रखनेवाले और एक-दूसरे को प्रभावित करनेवाले कारकों का तीन स्तरों पर अध्ययन किया जाता है।

(i) किसी भूभाग की प्राकृतिक संरचना, मानव निर्मित संरचना, उनकी विशेषताएँ और अन्य क्रियाकलापों का अध्ययन कर मानचित्र तैयार करना, वर्तमान प्रतिरूप और वैकल्पिक प्रतिरूप पर विचार करना तथा मानव पर पर्यावरण का प्रभाव और पर्यावरण पर मानवीय गतिविधियों के प्रभाव का अध्ययन करना

(ii) मानव और पर्यावरण के बीच के संबंधों का पारिस्थितिक विश्लेषण करना

(iii) आंतरिक आकृति, पारिस्थितिक सहलग्नता और बाह्य संबंधों की दृष्टि से प्रादेशिक संश्लेषण करना

इस प्रकार, मानव भूगोल के अध्ययन में कुछ जिज्ञासाओं का समाधान खोजा जाता है। कुछ प्रमुख जिज्ञासाएँ निम्नलिखित है—

1. किसी वर्ग या समुदाय के मनुष्य कहाँ निवास करते हैं?
2. वे कहीं क्यों निवास करते हैं?
3. क्या वे सभी एकसमान हैं, अथवा विभिन्न वर्ग के हैं?
4. प्रकृति के साथ उनका संबंध कैसा है?
5. उनकी सांस्कृतिक गतिविधियाँ कैसी हैं?
6. उनके क्रियाकलापों का प्रभाव भावी पीढ़ी के लिए कैसा होगा?

समय के साथ मानव भूगोल के अध्ययन-क्षेत्र में परिवर्तन

जैसा पहले वर्णन किया जा चुका है, प्राचीनकाल में मानव गतिविधियाँ सीमित थीं। पर्यटकों, व्यापारियों और नाविकों द्वारा विश्व के लोग एक-दूसरे को जानने लगे। साम्राज्यवाद के बाद तो प्राकृतिक संसाधनों और बाजार की खोज ने अध्ययन को तीव्र गति दी और आज तो मानों पूरा विश्व सिमटकर एक गाँव बन गया है। इसी प्रकार, विभिन्न क्षेत्रों में रुचि रखनेवालों के अध्ययन का क्षेत्र भी भिन्न-भिन्न होता है, जैसे—समाजशास्त्रियों का ध्यान लोगों के स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर की ओर रहता है तो अर्थशास्त्रियों का ध्यान गरीबी, उसके कारण, धनी और गरीब वर्ग की ओर रहता है। वहीं कुछ लोग धर्म, सभ्य जाति इत्यादि के अध्ययन पर जोर देते हैं।

निम्नलिखित तालिका में समय के साथ मानव भूगोल के अध्ययन-क्षेत्र में होनेवाले परिवर्तनों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 1.1

समय के साथ मानव भूगोल के अध्ययन-क्षेत्र में परिवर्तन

काल	अध्ययन-क्षेत्र	प्रमुख गतिविधियाँ
• प्राचीनकाल	प्रकृति के रहस्यों की खोज	ऋतु, ज्योतिष संबंधी ज्ञान में वृद्धि
• औपनिवेशिक काल	क्षेत्रीय अध्ययन	विश्व के विभिन्न भूभागों का अध्ययन
• विश्वयुद्धों के बीच का काल	क्षेत्रीय विभिन्नता	किसी क्षेत्र विशेष की विशेषता और अन्य भागों से इसका अंतर
• शीतयुद्ध काल का प्रारंभिक चरण (1950–1960)	क्षेत्रीय संगठन	कंप्यूटर की खोज, वैज्ञानिक नियमों का मानव द्वारा व्यापक उपयोग, विभिन्न मानवीय क्रियाओं का मानचित्र-प्रारूप निर्माण
• उत्तर शीतयुद्ध काल (1970–1990)	मानवीय और व्यावहारिक चिंतन	सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में भूगोल का महत्त्व
• आधुनिक काल (1990 के बाद)	भूगोल का आधुनिकीकरण	भूगोल के सामान्य सिद्धांत के बदले विभिन्न क्षेत्रों की स्थानीय स्थितियों के अध्ययन पर बल देकर मानव कल्याण के लिए मार्ग प्रशस्त करना

(i) किसी भूभाग की प्राकृतिक संरचना, मानव निर्मित संरचना, उनकी विशेषताएँ और अन्य क्रियाकलापों का अध्ययन कर मानचित्र तैयार करना, वर्तमान प्रतिरूप और वैकल्पिक प्रतिरूप पर विचार करना तथा मानव पर पर्यावरण का प्रभाव और पर्यावरण पर मानवीय गतिविधियों के प्रभाव का अध्ययन करना

(ii) मानव और पर्यावरण के बीच के संबंधों का पारिस्थितिक विश्लेषण करना

(iii) आंतरिक आकृति, पारिस्थितिक सहलग्नता और बाह्य संबंधों की दृष्टि से प्रादेशिक संश्लेषण करना

इस प्रकार, मानव भूगोल के अध्ययन में कुछ जिज्ञासाओं का समाधान खोजा जाता है। कुछ प्रमुख जिज्ञासाएं निम्नलिखित है—

1. किसी वर्ग या समुदाय के मनुष्य कहाँ निवास करते हैं?
2. वे कहीं क्यों निवास करते हैं?
3. क्या वे सभी एकसमान हैं, अथवा विभिन्न वर्ग के हैं?
4. प्रकृति के साथ उनका संबंध कैसा है?
5. उनकी सांस्कृतिक गतिविधियाँ कैसी हैं?
6. उनके क्रियाकलापों का प्रभाव भावी पीढ़ी के लिए कैसा होगा?

समय के साथ मानव भूगोल के अध्ययन-क्षेत्र में परिवर्तन

जैसा पहले वर्णन किया जा चुका है, प्राचीनकाल में मानव गतिविधियाँ सीमित थीं। पर्यटकों, व्यापारियों और नाविकों द्वारा विश्व के लोग एक-दूसरे को जानने लगे। साम्राज्यवाद के बाद तो प्राकृतिक संसाधनों और बाजार की खोज ने अध्ययन को तीव्र गति दी और आज तो मानों पूरा विश्व सिमटकर एक गाँव बन गया है। इसी प्रकार, विभिन्न क्षेत्रों में रुचि रखनेवालों के अध्ययन का क्षेत्र भी भिन्न-भिन्न होता है, जैसे—समाजशास्त्रियों का ध्यान लोगों के स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर की ओर रहता है तो अर्थशास्त्रियों का ध्यान गरीबी, उसके कारण, धनी और गरीब वर्ग की ओर रहता है। वहीं कुछ लोग धर्म, सभ्य जाति इत्यादि के अध्ययन पर जोर देते हैं।

निम्नलिखित तालिका में समय के साथ मानव भूगोल के अध्ययन-क्षेत्र में होनेवाले परिवर्तनों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 1.1

समय के साथ मानव भूगोल के अध्ययन-क्षेत्र में परिवर्तन

काल	अध्ययन-क्षेत्र	प्रमुख गतिविधियाँ
• प्राचीनकाल	प्रकृति के रहस्यों की खोज	ऋतु, ज्योतिष संबंधी ज्ञान में वृद्धि
• औपनिवेशिक काल	क्षेत्रीय अध्ययन	विश्व के विभिन्न भूभागों का अध्ययन
• विश्वयुद्धों के बीच का काल	क्षेत्रीय विभिन्नता	किसी क्षेत्र विशेष की विशेषता और अन्य भागों से इसका अंतर
• शीतयुद्ध काल का प्रारंभिक चरण (1950–1960)	क्षेत्रीय संगठन	कंप्यूटर की खोज, वैज्ञानिक नियमों का मानव द्वारा व्यापक उपयोग, विभिन्न मानवीय क्रियाओं का मानचित्र-प्रारूप निर्माण
• उत्तर शीतयुद्ध काल (1970–1990)	मानवीय और व्यावहारिक चिंतन	सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में भूगोल का महत्त्व
• आधुनिक काल (1990 के बाद)	भूगोल का आधुनिकीकरण	भूगोल के सामान्य सिद्धांत के बदले विभिन्न क्षेत्रों की स्थानीय स्थितियों के अध्ययन पर बल देकर मानव कल्याण के लिए मार्ग प्रशस्त करना

1. नियतिवाद या निश्चयवाद—यह पुरानी विचारधारा है। इसके अनुसार, भौगोलिक संरचना, जलवायु, वनस्पति और जीव-जंतु पर्यावरण का निर्माण करते हैं और यही पर्यावरण समाज, राष्ट्र, संस्कृति, जीवनशैली, विकास इत्यादि को नियंत्रित करता है। इसी से मानव का आचरण, विवेक इत्यादि भी नियंत्रित होते हैं, अर्थात मनुष्य का स्थान गौण है। इस दर्शन की आलोचना दो आधारों पर की जाती है।

(i) एक ही वातावरण या पर्यावरण के भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के विचारों और क्रियाकलापों में बहुत अधिक विभिन्नता पाई जाती है। जैसे भूमध्यसागर के तट पर रोम और यूनान जैसी सभ्यताओं का विकास हुआ। परंतु, सागरतट के क्षेत्रों ऑस्ट्रेलिया, चिली, कैलिफोर्निया में वैसी सभ्यता विकसित नहीं हो पाई जबकि इनकी जलवायु भी भूमध्यसागरीय जलवायु है। यह विचारधारा ऐसी समस्याओं की व्याख्या करने में असमर्थ थी। फलस्वरूप, अध्ययन की अनेक नई विचारधाराओं का विकास हुआ।

(क) **प्रत्यक्षवाद**—इसमें भौगोलिक प्रतिरूपों के अध्ययन के साथ विश्लेषण पर ध्यान दिया गया। मात्रात्मक विधियों का उपयोग किया गया। इसके समर्थक विलियम वंग और डेविड हार्वे जैसे विद्वान रहे।

(ख) **कल्याणपरक व्यवहारवाद**—डी॰ एम॰ स्मिथ का विचार था कि प्रत्यक्षवाद की तकनीक नीरस है। साथ ही, इसमें मानव की निर्णय क्षमता, विश्वास और भय जैसे मानवोचित गुणों के विश्लेषण पर ध्यान नहीं दिया गया है। प्रत्यक्षवाद के समर्थक डेविड हार्वे ने भी इस विचार पर सहमति व्यक्त की और इसके समर्थक बन गए। पूँजीवाद की कमियों पर ध्यान दिया गया। निर्धनता, विकास में प्रादेशिक असमानता, नगरीय झुग्गी-झोपड़ियों और अभाव जैसे विषय भूगोल के अध्ययन के केंद्र बन गए।

(ग) **मानवतावाद**—कल्याणपरक विचारधारा को विकसित कर इसका प्रादुर्भाव हुआ है। इसमें मानव जागृति मानव साधन, मानव चेतना और मानव की सृजनात्मक शक्ति के संदर्भ में मानव की केंद्रीय एवं क्रियाशील भूमिका पर बल दिया गया है। इस प्रकार, भूगोल के केंद्र में मानव स्थापित हुआ है। मानव भूगोल और मानवीय हो गया है।

(ii) यद्यपि मानव पर पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है तथापि मानव भी पर्यावरण को बहुत हद तक प्रभावित करता है पर्यावरण प्रदूषण इसका ज्वलंत प्रमाण है।

2. संभावनावाद—इस दर्शन में नियतिवाद की यह धारणा कि 'मनुष्य प्रकृति का दास है' पूरी तरह अस्वीकृत कर दी जाती है। इसके अनुसार, प्रकृति के तत्त्वों को चुनने के लिए मानव स्वतंत्र है। मानव निष्क्रिय नहीं है बल्कि प्रत्येक गतिविधि में इसकी सक्रिय भूमिका होती है। लूसियन फेब्रे ने सर्वप्रथम 'संभावनावाद' शब्द का प्रयोग किया। उनका विचार है कि निश्चित कुछ नहीं है। सब कार्यों के होने की संभावना अलग-अलग है। मानव इन संभावनाओं का स्वामी है। अतः, यह निर्णय करने का अधिकार उसके पास है कि संभावनाओं का कैसे और कब उपयोग किया जाए? मनुष्य की जीवनशैली उसकी सभ्यता का दर्पण एवं प्रतिफल होती है।

मनुष्य के विकास के अनेक साधन प्रकृति में उपलब्ध हैं, परंतु उनके उपयोग की एक निश्चित सीमा भी है, जिसे पार कर लेने पर पीछे हटने का मार्ग बहुत कठिन है। सीमा पार करने का अर्थ है आपदाओं को निमंत्रित करना। अतः, ग्रिफिथ टेलर ने एक अलग दर्शन प्रस्तुत किया जिसे 'नवनिश्चयवाद' कहते हैं। उनका विचार है कि भूगोलवेत्ता उचित सलाह दे सकता है। प्रकृति की योजनाओं की व्याख्या करना उसके अधिकार-क्षेत्र से बाहर है।

आधुनिक विचारधारा

पहले युद्ध में जय-पराजय से किसी राष्ट्र की महानता और स्वाभिमान का मापन किया जाता था, परंतु दो विश्वयुद्धों के बाद मानव की युद्ध-पिपासा शांत हो गई। इसी के साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र यहाँ तक कि शिक्षा और स्वभावतः भूगोल के अध्ययन में भी व्यापक परिवर्तन हुआ। पारंपरिक भूगोल गरीबी, सामाजिक और प्रादेशिक असमानता, समाज कल्याण, सशक्तिकरण आदि के अध्ययन तक ही अपने को सीमित रखता था।

1. नियतिवाद या निश्चयवाद—यह पुरानी विचारधारा है। इसके अनुसार, भौगोलिक संरचना, जलवायु, वनस्पति और जीव-जंतु पर्यावरण का निर्माण करते हैं और यही पर्यावरण समाज, राष्ट्र, संस्कृति, जीवनशैली, विकास इत्यादि को नियंत्रित करता है। इसी से मानव का आचरण, विवेक इत्यादि भी नियंत्रित होते हैं, अर्थात मनुष्य का स्थान गौण है। इस दर्शन की आलोचना दो आधारों पर की जाती है।

(i) एक ही वातावरण या पर्यावरण के भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के विचारों और क्रियाकलापों में बहुत अधिक विभिन्नता पाई जाती है। जैसे भूमध्यसागर के तट पर रोम और यूनान जैसी सभ्यताओं का विकास हुआ। परंतु, सागरतट के क्षेत्रों ऑस्ट्रेलिया, चिली, कैलिफोर्निया में वैसी सभ्यता विकसित नहीं हो पाई जबकि इनकी जलवायु भी भूमध्यसागरीय जलवायु है। यह विचारधारा ऐसी समस्याओं की व्याख्या करने में असमर्थ थी। फलस्वरूप, अध्ययन की अनेक नई विचारधाराओं का विकास हुआ।

(क) **प्रत्यक्षवाद**—इसमें भौगोलिक प्रतिरूपों के अध्ययन के साथ विश्लेषण पर ध्यान दिया गया। मात्रात्मक विधियों का उपयोग किया गया। इसके समर्थक विलियम वंग और डेविड हार्वे जैसे विद्वान रहे।

(ख) **कल्याणपरक व्यवहारवाद**—डी॰ एम॰ स्मिथ का विचार था कि प्रत्यक्षवाद की तकनीक नीरस है। साथ ही, इसमें मानव की निर्णय क्षमता, विश्वास और भय जैसे मानवोचित गुणों के विश्लेषण पर ध्यान नहीं दिया गया है। प्रत्यक्षवाद के समर्थक डेविड हार्वे ने भी इस विचार पर सहमति व्यक्त की और इसके समर्थक बन गए। पूँजीवाद की कमियों पर ध्यान दिया गया। निर्धनता, विकास में प्रादेशिक असमानता, नगरीय झुग्गी-झोपड़ियों और अभाव जैसे विषय भूगोल के अध्ययन के केंद्र बन गए।

(ग) **मानवतावाद**—कल्याणपरक विचारधारा को विकसित कर इसका प्रादुर्भाव हुआ है। इसमें मानव जागृति मानव साधन, मानव चेतना और मानव की सृजनात्मक शक्ति के संदर्भ में मानव की केंद्रीय एवं क्रियाशील भूमिका पर बल दिया गया है। इस प्रकार, भूगोल के केंद्र में मानव स्थापित हुआ है। मानव भूगोल और मानवीय हो गया है।

(ii) यद्यपि मानव पर पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है तथापि मानव भी पर्यावरण को बहुत हद तक प्रभावित करता है पर्यावरण प्रदूषण इसका ज्वलंत प्रमाण है।

2. संभावनावाद—इस दर्शन में नियतिवाद की यह धारणा कि 'मनुष्य प्रकृति का दास है' पूरी तरह अस्वीकृत कर दी जाती है। इसके अनुसार, प्रकृति के तत्त्वों को चुनने के लिए मानव स्वतंत्र है। मानव निष्क्रिय नहीं है बल्कि प्रत्येक गतिविधि में इसकी सक्रिय भूमिका होती है। लूसियन फेब्रे ने सर्वप्रथम 'संभावनावाद' शब्द का प्रयोग किया। उनका विचार है कि निश्चित कुछ नहीं है। सब कार्यों के होने की संभावना अलग-अलग है। मानव इन संभावनाओं का स्वामी है। अतः, यह निर्णय करने का अधिकार उसके पास है कि संभावनाओं का कैसे और कब उपयोग किया जाए? मनुष्य की जीवनशैली उसकी सभ्यता का दर्पण एवं प्रतिफल होती है।

मनुष्य के विकास के अनेक साधन प्रकृति में उपलब्ध हैं, परंतु उनके उपयोग की एक निश्चित सीमा भी है, जिसे पार कर लेने पर पीछे हटने का मार्ग बहुत कठिन है। सीमा पार करने का अर्थ है आपदाओं को निमंत्रित करना। अतः, ग्रिफिथ टेलर ने एक अलग दर्शन प्रस्तुत किया जिसे 'नवनिश्चयवाद' कहते हैं। उनका विचार है कि भूगोलवेत्ता उचित सलाह दे सकता है। प्रकृति की योजनाओं की व्याख्या करना उसके अधिकार-क्षेत्र से बाहर है।

आधुनिक विचारधारा

पहले युद्ध में जय-पराजय से किसी राष्ट्र की महानता और स्वाभिमान का मापन किया जाता था, परंतु दो विश्वयुद्धों के बाद मानव की युद्ध-पिपासा शांत हो गई। इसी के साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र यहाँ तक कि शिक्षा और स्वभावतः भूगोल के अध्ययन में भी व्यापक परिवर्तन हुआ। पारंपरिक भूगोल गरीबी, सामाजिक और प्रादेशिक असमानता, समाज कल्याण, सशक्तिकरण आदि के अध्ययन तक ही अपने को सीमित रखता था।

1. नियतिवाद या निश्चयवाद—यह पुरानी विचारधारा है। इसके अनुसार, भौगोलिक संरचना, जलवायु, वनस्पति और जीव-जंतु पर्यावरण का निर्माण करते हैं और यही पर्यावरण समाज, राष्ट्र, संस्कृति, जीवनशैली, विकास इत्यादि को नियंत्रित करता है। इसी से मानव का आचरण, विवेक इत्यादि भी नियंत्रित होते हैं, अर्थात मनुष्य का स्थान गौण है। इस दर्शन की आलोचना दो आधारों पर की जाती है।

(i) एक ही वातावरण या पर्यावरण के भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के विचारों और क्रियाकलापों में बहुत अधिक विभिन्नता पाई जाती है। जैसे भूमध्यसागर के तट पर रोम और यूनान जैसी सभ्यताओं का विकास हुआ। परंतु, सागरतट के क्षेत्रों ऑस्ट्रेलिया, चिली, कैलिफोर्निया में वैसी सभ्यता विकसित नहीं हो पाई जबकि इनकी जलवायु भी भूमध्यसागरीय जलवायु है। यह विचारधारा ऐसी समस्याओं की व्याख्या करने में असमर्थ थी। फलस्वरूप, अध्ययन की अनेक नई विचारधाराओं का विकास हुआ।

(क) प्रत्यक्षवाद—इसमें भौगोलिक प्रतिरूपों के अध्ययन के साथ विश्लेषण पर ध्यान दिया गया। मात्रात्मक विधियों का उपयोग किया गया। इसके समर्थक विलियम वंग और डेविड हार्वे जैसे विद्वान रहे।

(ख) कल्याणपरक व्यवहारवाद—डी॰ एम॰ स्मिथ का विचार था कि प्रत्यक्षवाद की तकनीक नीरस है। साथ ही, इसमें मानव की निर्णय क्षमता, विश्वास और भय जैसे मानवोचित गुणों के विश्लेषण पर ध्यान नहीं दिया गया है। प्रत्यक्षवाद के समर्थक डेविड हार्वे ने भी इस विचार पर सहमति व्यक्त की और इसके समर्थक बन गए। पूँजीवाद की कमियों पर ध्यान दिया गया। निर्धनता, विकास में प्रादेशिक असमानता, नगरीय झुग्गी-झोपड़ियों और अभाव जैसे विषय भूगोल के अध्ययन के केंद्र बन गए।

(ग) मानवतावाद—कल्याणपरक विचारधारा को विकसित कर इसका प्रादुर्भाव हुआ है। इसमें मानव जागृति मानव साधन, मानव चेतना और मानव की सृजनात्मक शक्ति के संदर्भ में मानव की केंद्रीय एवं क्रियाशील भूमिका पर बल दिया गया है। इस प्रकार, भूगोल के केंद्र में मानव स्थापित हुआ है। मानव भूगोल और मानवीय हो गया है।

(ii) यद्यपि मानव पर पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है तथापि मानव भी पर्यावरण को बहुत हद तक प्रभावित करता है पर्यावरण प्रदूषण इसका ज्वलंत प्रमाण है।

2. संभावनावाद—इस दर्शन में नियतिवाद की यह धारणा कि 'मनुष्य प्रकृति का दास है' पूरी तरह अस्वीकृत कर दी जाती है। इसके अनुसार, प्रकृति के तत्त्वों को चुनने के लिए मानव स्वतंत्र है। मानव निष्क्रिय नहीं है बल्कि प्रत्येक गतिविधि में इसकी सक्रिय भूमिका होती है। लूसियन फेब्रे ने सर्वप्रथम 'संभावनावाद' शब्द का प्रयोग किया। उनका विचार है कि निश्चित कुछ नहीं है। सब कार्यों के होने की संभावना अलग-अलग है। मानव इन संभावनाओं का स्वामी है। अतः, यह निर्णय करने का अधिकार उसके पास है कि संभावनाओं का कैसे और कब उपयोग किया जाए? मनुष्य की जीवनशैली उसकी सभ्यता का दर्पण एवं प्रतिफल होती है।

मनुष्य के विकास के अनेक साधन प्रकृति में उपलब्ध हैं, परंतु उनके उपयोग की एक निश्चित सीमा भी है, जिसे पार कर लेने पर पीछे हटने का मार्ग बहुत कठिन है। सीमा पार करने का अर्थ है आपदाओं को निमंत्रित करना। अतः, ग्रिफिथ टेलर ने एक अलग दर्शन प्रस्तुत किया जिसे 'नवनिश्चयवाद' कहते हैं। उनका विचार है कि भूगोलवेत्ता उचित सलाह दे सकता है। प्रकृति की योजनाओं की व्याख्या करना उसके अधिकार-क्षेत्र से बाहर है।

आधुनिक विचारधारा

पहले युद्ध में जय-पराजय से किसी राष्ट्र की महानता और स्वाभिमान का मापन किया जाता था, परंतु दो विश्वयुद्धों के बाद मानव की युद्ध-पिपासा शांत हो गई। इसी के साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र यहाँ तक कि शिक्षा और स्वभावतः भूगोल के अध्ययन में भी व्यापक परिवर्तन हुआ। पारंपरिक भूगोल गरीबी, सामाजिक और प्रादेशिक असमानता, समाज कल्याण, सशक्तिकरण आदि के अध्ययन तक ही अपने को सीमित रखता था।

1. नियतिवाद या निश्चयवाद—यह पुरानी विचारधारा है। इसके अनुसार, भौगोलिक संरचना, जलवायु, वनस्पति और जीव-जंतु पर्यावरण का निर्माण करते हैं और यही पर्यावरण समाज, राष्ट्र, संस्कृति, जीवनशैली, विकास इत्यादि को नियंत्रित करता है। इसी से मानव का आचरण, विवेक इत्यादि भी नियंत्रित होते हैं, अर्थात मनुष्य का स्थान गौण है। इस दर्शन की आलोचना दो आधारों पर की जाती है।

(i) एक ही वातावरण या पर्यावरण के भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के विचारों और क्रियाकलापों में बहुत अधिक विभिन्नता पाई जाती है। जैसे भूमध्यसागर के तट पर रोम और यूनान जैसी सभ्यताओं का विकास हुआ। परंतु, सागरतट के क्षेत्रों ऑस्ट्रेलिया, चिली, कैलिफोर्निया में वैसी सभ्यता विकसित नहीं हो पाई जबकि इनकी जलवायु भी भूमध्यसागरीय जलवायु है। यह विचारधारा ऐसी समस्याओं की व्याख्या करने में असमर्थ थी। फलस्वरूप, अध्ययन की अनेक नई विचारधाराओं का विकास हुआ।

(क) प्रत्यक्षवाद—इसमें भौगोलिक प्रतिरूपों के अध्ययन के साथ विश्लेषण पर ध्यान दिया गया। मात्रात्मक विधियों का उपयोग किया गया। इसके समर्थक विलियम वंग और डेविड हार्वे जैसे विद्वान रहे।

(ख) कल्याणपरक व्यवहारवाद—डी॰ एम॰ स्मिथ का विचार था कि प्रत्यक्षवाद की तकनीक नीरस है। साथ ही, इसमें मानव की निर्णय क्षमता, विश्वास और भय जैसे मानवोचित गुणों के विश्लेषण पर ध्यान नहीं दिया गया है। प्रत्यक्षवाद के समर्थक डेविड हार्वे ने भी इस विचार पर सहमति व्यक्त की और इसके समर्थक बन गए। पूँजीवाद की कमियों पर ध्यान दिया गया। निर्धनता, विकास में प्रादेशिक असमानता, नगरीय झुग्गी-झोपड़ियों और अभाव जैसे विषय भूगोल के अध्ययन के केंद्र बन गए।

(ग) मानवतावाद—कल्याणपरक विचारधारा को विकसित कर इसका प्रादुर्भाव हुआ है। इसमें मानव जागृति मानव साधन, मानव चेतना और मानव की सृजनात्मक शक्ति के संदर्भ में मानव की केंद्रीय एवं क्रियाशील भूमिका पर बल दिया गया है। इस प्रकार, भूगोल के केंद्र में मानव स्थापित हुआ है। मानव भूगोल और मानवीय हो गया है।

(ii) यद्यपि मानव पर पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है तथापि मानव भी पर्यावरण को बहुत हद तक प्रभावित करता है पर्यावरण प्रदूषण इसका ज्वलंत प्रमाण है।

2. संभावनावाद—इस दर्शन में नियतिवाद की यह धारणा कि 'मनुष्य प्रकृति का दास है' पूरी तरह अस्वीकृत कर दी जाती है। इसके अनुसार, प्रकृति के तत्त्वों को चुनने के लिए मानव स्वतंत्र है। मानव निष्क्रिय नहीं है बल्कि प्रत्येक गतिविधि में इसकी सक्रिय भूमिका होती है। लूसियन फेब्रे ने सर्वप्रथम 'संभावनावाद' शब्द का प्रयोग किया। उनका विचार है कि निश्चित कुछ नहीं है। सब कार्यों के होने की संभावना अलग-अलग है। मानव इन संभावनाओं का स्वामी है। अतः, यह निर्णय करने का अधिकार उसके पास है कि संभावनाओं का कैसे और कब उपयोग किया जाए? मनुष्य की जीवनशैली उसकी सभ्यता का दर्पण एवं प्रतिफल होती है।

मनुष्य के विकास के अनेक साधन प्रकृति में उपलब्ध हैं, परंतु उनके उपयोग की एक निश्चित सीमा भी है, जिसे पार कर लेने पर पीछे हटने का मार्ग बहुत कठिन है। सीमा पार करने का अर्थ है आपदाओं को निमंत्रित करना। अतः, ग्रिफिथ टेलर ने एक अलग दर्शन प्रस्तुत किया जिसे 'नवनिश्चयवाद' कहते हैं। उनका विचार है कि भूगोलवेत्ता उचित सलाह दे सकता है। प्रकृति की योजनाओं की व्याख्या करना उसके अधिकार-क्षेत्र से बाहर है।

आधुनिक विचारधारा

पहले युद्ध में जय-पराजय से किसी राष्ट्र की महानता और स्वाभिमान का मापन किया जाता था, परंतु दो विश्वयुद्धों के बाद मानव की युद्ध-पिपासा शांत हो गई। इसी के साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र यहाँ तक कि शिक्षा और स्वभावतः भूगोल के अध्ययन में भी व्यापक परिवर्तन हुआ। पारंपरिक भूगोल गरीबी, सामाजिक और प्रादेशिक असमानता, समाज कल्याण, सशक्तिकरण आदि के अध्ययन तक ही अपने को सीमित रखता था।

1. नियतिवाद या निश्चयवाद—यह पुरानी विचारधारा है। इसके अनुसार, भौगोलिक संरचना, जलवायु, वनस्पति और जीव-जंतु पर्यावरण का निर्माण करते हैं और यही पर्यावरण समाज, राष्ट्र, संस्कृति, जीवनशैली, विकास इत्यादि को नियंत्रित करता है। इसी से मानव का आचरण, विवेक इत्यादि भी नियंत्रित होते हैं, अर्थात मनुष्य का स्थान गौण है। इस दर्शन की आलोचना दो आधारों पर की जाती है।

(i) एक ही वातावरण या पर्यावरण के भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के विचारों और क्रियाकलापों में बहुत अधिक विभिन्नता पाई जाती है। जैसे भूमध्यसागर के तट पर रोम और यूनान जैसी सभ्यताओं का विकास हुआ। परंतु, सागरतट के क्षेत्रों ऑस्ट्रेलिया, चिली, कैलिफोर्निया में वैसी सभ्यता विकसित नहीं हो पाई जबकि इनकी जलवायु भी भूमध्यसागरीय जलवायु है। यह विचारधारा ऐसी समस्याओं की व्याख्या करने में असमर्थ थी। फलस्वरूप, अध्ययन की अनेक नई विचारधाराओं का विकास हुआ।

(क) प्रत्यक्षवाद—इसमें भौगोलिक प्रतिरूपों के अध्ययन के साथ विश्लेषण पर ध्यान दिया गया। मात्रात्मक विधियों का उपयोग किया गया। इसके समर्थक विलियम वंग और डेविड हार्वे जैसे विद्वान रहे।

(ख) कल्याणपरक व्यवहारवाद—डी॰ एम॰ स्मिथ का विचार था कि प्रत्यक्षवाद की तकनीक नीरस है। साथ ही, इसमें मानव की निर्णय क्षमता, विश्वास और भय जैसे मानवोचित गुणों के विश्लेषण पर ध्यान नहीं दिया गया है। प्रत्यक्षवाद के समर्थक डेविड हार्वे ने भी इस विचार पर सहमति व्यक्त की और इसके समर्थक बन गए। पूँजीवाद की कमियों पर ध्यान दिया गया। निर्धनता, विकास में प्रादेशिक असमानता, नगरीय झुग्गी-झोपड़ियों और अभाव जैसे विषय भूगोल के अध्ययन के केंद्र बन गए।

(ग) मानवतावाद—कल्याणपरक विचारधारा को विकसित कर इसका प्रादुर्भाव हुआ है। इसमें मानव जागृति मानव साधन, मानव चेतना और मानव की सृजनात्मक शक्ति के संदर्भ में मानव की केंद्रीय एवं क्रियाशील भूमिका पर बल दिया गया है। इस प्रकार, भूगोल के केंद्र में मानव स्थापित हुआ है। मानव भूगोल और मानवीय हो गया है।

(ii) यद्यपि मानव पर पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है तथापि मानव भी पर्यावरण को बहुत हद तक प्रभावित करता है पर्यावरण प्रदूषण इसका ज्वलंत प्रमाण है।

2. संभावनावाद—इस दर्शन में नियतिवाद की यह धारणा कि 'मनुष्य प्रकृति का दास है' पूरी तरह अस्वीकृत कर दी जाती है। इसके अनुसार, प्रकृति के तत्त्वों को चुनने के लिए मानव स्वतंत्र है। मानव निष्क्रिय नहीं है बल्कि प्रत्येक गतिविधि में इसकी सक्रिय भूमिका होती है। लूसियन फेब्रे ने सर्वप्रथम 'संभावनावाद' शब्द का प्रयोग किया। उनका विचार है कि निश्चित कुछ नहीं है। सब कार्यों के होने की संभावना अलग-अलग है। मानव इन संभावनाओं का स्वामी है। अतः, यह निर्णय करने का अधिकार उसके पास है कि संभावनाओं का कैसे और कब उपयोग किया जाए? मनुष्य की जीवनशैली उसकी सभ्यता का दर्पण एवं प्रतिफल होती है।

मनुष्य के विकास के अनेक साधन प्रकृति में उपलब्ध हैं, परंतु उनके उपयोग की एक निश्चित सीमा भी है, जिसे पार कर लेने पर पीछे हटने का मार्ग बहुत कठिन है। सीमा पार करने का अर्थ है आपदाओं को निमंत्रित करना। अतः, ग्रिफिथ टेलर ने एक अलग दर्शन प्रस्तुत किया जिसे 'नवनिश्चयवाद' कहते हैं। उनका विचार है कि भूगोलवेत्ता उचित सलाह दे सकता है। प्रकृति की योजनाओं की व्याख्या करना उसके अधिकार-क्षेत्र से बाहर है।

आधुनिक विचारधारा

पहले युद्ध में जय-पराजय से किसी राष्ट्र की महानता और स्वाभिमान का मापन किया जाता था, परंतु दो विश्वयुद्धों के बाद मानव की युद्ध-पिपासा शांत हो गई। इसी के साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र यहाँ तक कि शिक्षा और स्वभावतः भूगोल के अध्ययन में भी व्यापक परिवर्तन हुआ। पारंपरिक भूगोल गरीबी, सामाजिक और प्रादेशिक असमानता, समाज कल्याण, सशक्तिकरण आदि के अध्ययन तक ही अपने को सीमित रखता था।